

4314. Spr. 2469. 4378. Bhāg. P. 6, 16, 39. कृत्वा रुक्तुः Bhāg. P. 2, 10, 24. पादौ रुक्ते 25. भृगोः श्मश्रूणि रुक्तु 4, 6, 51. वृत्रो ऽयमशुभावकः — विषद्रुमः RĀĀ-TAR. 4, 26. KĀM. NITIS. 13, 13. वृत्रशादल (श्रपय) HARIV. 3643. वृत्रपाङ्कुरेषु (कर्म्येषु) RAGH. 16, 18. वृत्रस्कन्धो मकाद्रुमः R. 2, 103, 6. वृत्रागप्रवाल (मनसिजतरु) MĀLAV. 59. केसरीरर्धवृत्रैः MEGH. 21. अत्र-ठमूलव MĀLAV. 8. वृत्रश्मश्रु R. 7, 23, 1, 13. — 3) *verwachsen, heilen*: चर्मणा चर्म रुक्तु, मांसं मांसनं रो° AV. 4, 12, 4. व्रणाश्रास्य चिरेण रुक्-ति Suçr. 1, 37, 6. Spr. 2647 (med.). KATHĀS. 28, 160. 179. वृत्रण R. 6, 103, 15. Suçr. 1, 37, 6. 60, 18. 88, 15. fg. 18. RAGH. 13, 73. KATHĀS. 10, 197. 63, 15. 101, 348. RĀĀ-TAR. 4, 281. H. 463. Vgl. वृत्रठ. — 4) *wachsen so v. a. sich entwickeln, sich bilden, hervorgehen; gedeihen, an Umfang gewinnen, zunehmen*: रुक्ति क्वा धिक्प्रत्यूकाः RĀĀ-TAR. 1, 158. कश्चिन्म-तिविपर्यासप्रकारो रुक्दि रुक्ति 3, 42, 4, 236. कामधिपस्वधि रचिता न पर-म रुक्ति Bhāg. P. 6, 16, 39. ततदा वाक्यं न रुक्ति so v. a. *trägt keine Frucht, ist unnütz* MBh. 12, 11944. अति मे रुक्ते वृत्राम् 6, 581. Spr. 2338. RĀĀ-TAR. 3, 48. Bhāg. P. 1, 8, 48. 9, 9, 47. ०यौवनं *bei dem sich das Jünglingsalter eingestellt hat* 10, 53, 9. PĀNĀK. 3, 7, 37. KATHĀS. 27, 187. संश्रयदोषवृत्रं *hervorgegangen aus* RAGH. 6, 41. 1, 31. वृत्रश्च कृतमूलश्च शेषं स्थास्यति ते सुतः *gewachsen so v. a. sich Anhang verschafft habend* R. 2, 9, 27. वृत्रसौकुद *bei dem die Freundschaft Wurzeln geschlagen hat* Vikr. 10. योगिनी वृत्रयोगीः Bhāg. P. 3, 21, 13. ऋषयो वृत्रमन्यवः 4, 14, 34. 5, 12, 6. 8, 22, 6. 10, 47, 59. fg. 53, 40. वृत्र = ज्ञात MED. dh. 3. — 5) *वृत्र* *gewachsen so v. a. verbreitet, allgemein bekannt, offenkundig; = प्रसिद्ध* MED. तव तन्वङ्गि मिथ्यैव वृत्रमङ्गेषु मारदवम् Spr. 4112. ज्ञातात्किल त्रा-यत इत्युदयः तत्रस्य शब्दो भुवनेषु वृत्रः RAGH. 2, 53. ŚIH. D. 13, 8. DAÇAK. 82, 3. Verz. d. Oxf. H. 177, b, 17. GAUDAP. zu SĀMKEJAK. 61. Schol. zu BHATĪ. 3, 18. सुवृत्रे कारार्थं VARĀH. BRH. S. 2, 3. अत्रठ *unbekannt, uner- hört (und nicht वृत्र oder अत्रठ) ist wohl anzunehmen* KATHĀS. 61, 251. RĀĀ-TAR. 4, 124. 3, 173. — 6) *वृत्र* *überliefert, allgemein bekannt* von Wörtern, deren Bedeutung etymologisch sich nicht erklären lässt; eine spezielle, von der Etymologie unabhängige (nach indischer Anschauung) Bedeutung habend H. 1. व्युत्पत्तिरुक्ताः शब्दा वृत्रा घ्रा-खण्डलादयः 2. यत्रावयवशक्तिनैरेपेक्षया (d. i. ०क्षेपा) समुदायशक्तिमात्रेण बुध्यते तद्वृत्रं यथा गोपदघटादिपदम् Comm. zu BRĀSHĀP. S. 83. Schol. zu P. 2, 2, 26. अमनुष्यशब्दो रतःपिशाचादिषु वृत्रः 4, 28. 3, 1, 129. 4, 3, 99. 5, 1, 48. 59. 3, 27. 6, 2, 8. SIDDH. K. zu P. 6, 3, 84. VOP. 7, 14. नाम वृत्रमपि च व्युदपादि Çiç. 10, 23. ०नाममाला Verz. d. Oxf. H. 210, b, 4 v. u.; vgl. योगवृत्रं und यौगिकवृत्रं unter यौगिक. — MBh. 1, 5387 ist nicht रुक्ते, wie JOHNSON und nach ihm BENFEY annehmen, sondern उक्ते gemeint. Vgl. 1. रुध्.

— *caus.* रुक्तेपति und später रोपयति P. 7, 3, 43. VOP. 18, 13. 1) *in die Höhe bringen, aufsteigen machen*: ये सूर्यमैरुक्तेषु र्वि RV. 10, 62, 3. 63, 11. AV. 13, 1, 13. TBH. 1, 2, 4, 1. चतुष्पञ्चाशत् कस्तात्रोपयिता मका-शिलाम् *aufführen* RĀĀ-TAR. 4, 199. — 2) *legen auf, bringen in, stecken an, in*: फलवत्तश्च ये वृत्राः समूलविटपास्तथा । रोपयिता बृहन्नौषु R. GORR. 1, 9, 8. तामरोपयत् । गुरुनासो मुखे तस्याः KATHĀS. 61, 16. चापरो-पितशर Spr. 2289. मुकुटे रोपितः काचशरणाभरणे मणिः *gefasst in* 2206. अक्षितरोपितमार्गाणं *gerichtet auf* RAGH. 9, 22. राजवेष्मनि ते सुधु रोक्ति-

तम् *deine Versetzung in* MBh. 4, 271. ते सुधु गृहे तु d. i. ते सुधु गृहे तु *ed.* Bomb. *übergeben, übertragen*: गुणवत्सुतेरोपितश्रियः — दिलीपवंशजाः RAGH. 8, 11. — 3) *pflanzen, säen*: तस्माद्दत्ताश्च रोपयेत् MBh. 13, 2995. 6072. R. 2, 80, 7 (87, 8 GORR.). Spr. 2349. VARĀH. BRH. S. 53, 8. fg. 20. RĀĀ-TAR. 2, 15, 130. शाखा एव रोपिता वृत्रतां याति *in die Erde gesteckt* KULL. zu M. 1, 46. अरामांश्च रोपयेत् MBh. 13, 3002. प्रयति सर्वबीजानि रोप्य-माणानि चैव रुक् 3, 13116. bildlich: उच्चखान — बद्धमूला जणाह्नदमीं प्रुचं दीर्घमरोपयत् RĀĀ-TAR. 3, 149. तदेष शतनोर्विशः (so die neuere Ausg.) पृथिव्या रोपिता मया HARIV. 3007. — 4) *wachsen —, verwachsen ma- chen, heilen lassen, heilen (trans.)*: रुक्तेपदम् (sc. अस्थि च्छिन्नम्) AV. 4, 12, 1. व्रणान्नोपयेत् Suçr. 2, 10, 11. 4. KATHĀS. 28, 163. 169. fg. 177. fg.

— *desid.* रुक्तेति; Bhāg. P. 4, 8, 67 ist प्रेम्णारुक्तेत्तं (*desid.* von अत्र-रुक्) zu schreiben.

— अति 1) *hinaussteigen über*: अति त्री सोम रोचना रुक्ते धासते दि-वम् RV. 9, 17, 5. — 2) *größer wachsen*: यद्वैनातिरोक्तेति RV. 10, 90, 2 = ÇVETĀÇV. UP. 3, 15 = TATTVAS. 20 (v. l. अन्येन). — 3) *अतिवृत्रं all- gemeine Verbreitung, allgemeines Bekanntsein, Landkundigkeit* RĀĀ-TAR. 6, 272.

— *व्यति erlangen, theilhaftig werden; mit acc.*: तदा देहो देहमन्यं व्यतिरोक्तेति कालतः MBh. 3, 13929. statt dessen तदा देहैर्देहवृत्तो व्य-तिरोक्तेति नान्यथा 6, 184. — *caus. vertreiben, der Herrschaft berauben*: तत्राचलमर्कं दोषान्चैर्भवान्व्यतिरोपितः MBh. 3, 604.

— अधि 1) *ersteigen, besteigen*: गिरिं न वेना अधिं रोक्ते तेजसा RV. 4, 56, 2. नावंम् 8, 42, 3. स्थूपाम् AV. 3, 12, 6. द्याम् 13, 3, 26. स्वो रुक्तेषु अधिं नार्कमुत्तमम् VS. 11, 22. स मायमधिं रोक्ते मणिः श्रेष्ठाय मूर्धतः AV. 10, 6, 31. 11, 1, 13. दिव्येन विमानेन स्वर्गमध्यरुक्ते R. 2, 64, 48. Çiç. 98, 14. गिरिमधिरोक्तेतुम् MBh. 3, 9982. R. GORR. 1, 45, 5. 5, 54, 9. Çiç. 9, 1. Vikr. 14. रुक्तेषु अधिं 6, 15. क्रव्यादानं JĀĀ. 1, 272. अधिरोक्तेति यं नि-त्यं पिशाचाः पुरुषं प्रति MBh. 3, 14506. क्वान् 7, 8917. R. 5, 73, 28. Spr. 4001. KATHĀS. 12, 135. 13, 28. वेदीम् MBh. 3, 11019 (S. 570, med.). 11021 (ebend., act.). तरुम् R. 3, 76, 28. चिताम् HARIV. 771 (med.). विमानम्, र-थम् MBh. 3, 4095. 14943 (med.). R. 2, 83, 2. 7, 75, 8 (med.). KATHĀS. 45, 864. Bhāg. P. 4, 12, 27. MĀRK. P. 125, 16. BHATĪ. 3, 108. पर्यङ्गम् MBh. 3, 1188. आसनम् R. 1, 70, 9 (med.). शयनम् 2, 42, 29. *besteigen* (zur Begat- tung): पुत्रो मातरं स्वसारं चाधिरोक्तेति AIR. BR. 7, 18. *treten auf*: केशा-दीनाधिरोक्तेत् KULL. zu M. 4, 78. Suçr. 1, 110, 17 (zugleich *besteigen*). पादा-कृतं यदुत्थाय मूर्धानमधिरोक्तेति — रेणुः *sich setzen auf* Spr. 1762. अधिरो-कार्यं पादाभ्यां पादुके त्रित्ति *mit den Füßen in die Schuhe* R. 2, 112, 21. fg. *sich in die Luft erheben, aufsteigen*: रथाङ्गाकूपना द्विजाः । अधिरोक्तेति 93, 11. Bhāg. P. 3, 23, 20. अधिवृत्रं *erstiegen —, besteigen habend, sitzend auf*: गिरि-शृङ्गाधिं RĀĀ-TAR. 5, 217. युगान्तम्, गगनात्तरम् Çiç. 57, 2 v. l. वटवृत्ता-धिं VET. in LA. (III) 21, 41. रथाधिवृत्रं Çiç. 97, 1. RAGH. 12, 104. लघुका-ष्ठाधिं PĀNĀK. 76, 18. अङ्गदं चाधिवृत्रः R. 5, 73, 27. VOP. 26, 129. तुरगा-धिं RAGH. 7, 34. द्विजस्कन्धाधिं R. 2, 43, 21 (43, 22 GORR.). Bhāg. P. 2, 7, 16. SARVADARÇANAS. 153, 11. रत्नोधिं KATHĀS. 18, 382. अधिवृत्रे गजारेके *hinaufgestiegen* R. 3, 57, 23. ०गोवाटा KATHĀS. 20, 145. अत्ररुक्थाधिवृत्रः RĀĀ-TAR. 6, 52. PĀNĀK. 128, 19. पर्वतस्याधिवृत्रं स्थलम् *oben gelegen* P. 5, 2, 34, Sch. — 2) *erklimmen so v. a. erreichen, gelangen zu*: एषामाध-